विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

बदलती भारतीय सामाजिक संरचना की चुनौतियां

भारतीय सामाजिक संरचना में बहुत तेज़ी से बदलाव हो रहे हैं। इतनी तेज़ी से कि हममें से बहुत सारे, विशेष रूप से वे जो पुरानी पीढ़ी से ताल्लुक रखते हैं, उन बदलावों के साथ ताल-मेल बिठाना तो दूर उन्हें समझ भी नहीं पा रहे हैं। वे हतप्रभ हैं। रह-रहकर वे एक ही वाक्य दुहराते हैं -हमारे ज़माने में तो ऐसा नहीं होता था। उनकी व्यथा एक हद तक सही भी है। उन्होंने जो सामाजिक ढांचा देखा था और जिस ढांचे में उन्होंने अपनी ज़िंदगी का बहुत बड़ा सक्रिय हिस्सा बिताया, वह अब लुप्त हो चुका है। उसकी जगह उस नई व्यवस्था ने ले ली है जिसे समझ पाने और स्वीकार कर पाने में वे अक्षम हैं। आखिर क्या और क्यों हुआ है ऐसा?

मैं जब इन बदलावों को समझने की कोशिश करता हूं तो कुछ बातें मेरे ध्यान में आती हैं। इनमें से पहली बात है लोगों का गांवों से निकल कर शहरों का रुख करना। जो कल तक गांव में थे अब कस्बों में, कस्बों वाले शहरों में और शहरों वाले महानगरों में बसने को उत्सुक और प्रयत्नरत होने लगे हैं। इतना ही नहीं। पहले जहां अपने इलाके को छोड़ बाहर जाने की कल्पना भी दुश्वार थी, अब लोग देश छोड़कर विदेश में जा बसने में भी संकोच नहीं करते हैं। इसके मूल में एक बड़ी चीज़ है शिक्षा का प्रसार। लोग पढ़ने लगे हैं, उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगे हैं, बड़े सपने देखने लगे हैं और इन सबके लिए 'बाहर' निकलना ज़रूरी हो गया है। जब नई पीढ़ी बाहर निकल रही है तो स्वभावतः संयुक्त परिवार का ढांचा चरमरा रहा है। न युवाओं के लिए यह संभव है कि वे मां-बाप के साथ उन्हीं के परिवेश में रहें और न मां बाप के लिए यह संभव है कि वे अपना घर-बार छोड़ बच्चों के साथ जाकर रहने लगें। परिणाम यह कि संयुक्त परिवार टूट कर एकल परिवारों में तब्दील हो रहे हैं। लोगों के गांव-कस्बों से बाहर निकल कर अन्यत्र स्थापित हो जाने के कारण एक बहुत बड़ा बदलाव जाति व्यवस्था में भी आ रहा है। जाति के कठोर बंधन अब शिथिल हो रहे हैं और बहुत जगहों पर तो वे लगभग अदृश्य ही हो गए हैं। छोटे स्थानों पर जहां हर कोई दूसरों के बारे में सब कुछ जानता था, कौन किसका बेटा है, उसकी जाति-धर्म क्या है, वगैरह, अब महानगरों में और बहुत बार देश से बाहर भी यह सब जानना न संभव रह गया है न आवश्यक। जाति-धर्म-प्रांत वगैरह की पहचानें धूमिल होती जा रही हैं और लोग एक दूसरे से इंसानों की तरह, न कि सवर्ण-दलित, हिंदू-मुसलमान, जैन-वैष्णव आदि की तरह, मिलने जुलने लगे हैं। एक बड़ा बदलाव स्त्री की हैसियत में आया है। शिक्षा के प्रसार और रूढ़ियों के बंधन से मुक्त आज की स्त्री खुली हवामें सांस ले रही है और अपने काम-काज की बड़ी ज़िम्मेदारियां निबाहने के साथ-साथ अपनी ज़िंदगी से जुड़े फैसले भी खुद करने लगी है। वह समय अब अतीत हो गया है जब बच्ची को माता पिता के, युवती को पति के और वृद्धा को बेटों के संरक्षण में और उनके नियंत्रण में रहना होता था, आज स्त्रियों का एक बड़ा समूह ख़ुद मुख्तार हो गया है। कहना अनावश्यक है कि पुरानी पीढ़ी के बहुत सारे लोगों को स्त्री की यह नव अर्जित स्वाधीनता पसंद नहीं आ रही है।

असल में पुरानी पीढ़ी का एक टुकड़ा ऐसा है जिसे न बेटियों का पढ़ना पसंद आ रहा है न उनका नौकरी करना और न उनका स्वतंत्र होना। अव्वल तो वे चाहते ही नहीं कि लड़की ज़्यादा पढ़े-लिखे, और अगर पढ़-लिख भी जाए तो कम से कम नौकरी तो न करे। और अगर नौकरी कर भी ले तो 'परिवार की मर्यादा और संस्कारों का पूर्णतः निर्वहन करती रहे। और अगर इसमें से कुछ भी उनकी कल्पनाओं से हटकर हो तो उन्हें आज की स्त्री को गरियाने में, उसके चरित्र पर लांछन लगाने में कोई संकोच नहीं होता। यही बात जाति व्यवस्था को लेकर भी है। अतीत के गांवों में कुछ ख़ास समुदायों के लोगों से जैसा व्यवहार वे करने के आदी रहे हैं, आज जब उन समुदायों के पढ़े लिखे और उच्च पदस्थ लोगों के साथ वे वैसा ही बर्ताव नहीं कर पाते हैं तो उनके पास बड़ा ख़राब समय आ गया है का रोना रोने के सिवा कोई विकल्प नहीं बचता है। बदलावों को स्वीकार न कर पाने की पीड़ा ख़ुद अपने बच्चों के साथ इस पीढ़ी के रिश्तों में भी देखी जा सकती है। हम तो अपने मां-बाप के सामने ऐसा नहीं कर सकते थे कहकर वे आज की पीढ़ी, जो निश्चय ही अधिक विवेक संपन्न और अपने अधिकारों के प्रति सजग व मुखर है, के प्रति अपनी नाराज़गी व्यक्त करते हैं। पुरानी पीढ़ी के लिए जितना सहज यह कहकर नई पीढ़ी को दबाना और उससे अपनी बात मनवाना था कि क्या इसी दिन के लिए हमने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया था, उतना आज संभव नहीं रह गया है। अगर कोई यह कहता है तो उसे इसका कोई अप्रिय उत्तर भी सुनने के लिए तैयार रहना होता है। और सही भी है। जीवन कोई सौदा तो है नहीं कि हमने यह किया तो उसके बदले में अब तुम यह करो। असल में बहुत बड़ी तक़लीफ़ यह है कि पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी को उसी ढर्रे पर चलाना चाहती है जिस ढर्रे पर चलकर उसने अपनी ज़िंदगी बिताई है, जबकि नई पीढ़ी अपनी राह ख़ुद बनाना चाहती है। आदर्श स्थिति तो यह हो कि जब बच्चे बड़े हो जाएं तो मां-बाप उनके जीवन के निर्णायक न रहकर सलाहकार की भूमिका अंगीकार कर लें। उनके पास व्यापक जीवनानुभव हैं। वे बच्चों को सलाह दे दें, और इसके बाद उनके निर्णय को सहज रूप से स्वीकार करें, भले ही वह निर्णय उनकी सलाह से भिन्न हो।

> **असल में पुरानी पीढ़ी का एक टुकड़ा ऐसा है जिसे न बेटियों का पढ़ना पसंद आ रहा है न उनका नौकरी करना और न उनका स्वतंत्र होना। अव्वल तो वे चाहते ही नहीं कि लड़की ज़्यादा पढ़े-लिखे, और अगर पढ़-लिख भी जाए तो कम से कम नौकरी तो न करे। और अगर नौकरी कर भी ले तो 'परिवार की मर्यादा और संस्कारों का पूर्णतः निर्वहन करती रहे।**

ये जो बदलाव हमारी सामाजिक संरचना में आ रहे हैं, इनकी अपनी समस्याएं भी कम नहीं हैं। एक तरफ जहां जाति और धर्म की जंजीरें ढीली हो रही हैं वहीं हमारी सत्ताकामी राजनीति की वजह से धार्मिक विद्वेष बढ़ भी रहा है। ऐसा ही बहुत बार जातियों के मामले में भी हो रहा है। निहित स्वार्थी तत्व जातिगत विद्वेष को बढ़ाने में ज़रा भी संकोच नहीं कर रहे हैं। पिछड़ों, दलितों, अल्पसंख्यकों के प्रति वैमनस्य और अवमानना को लगातार बढ़ाया जा रहा है। ऐसा ही स्त्रियों के मामले में भी हो रहा है। पारंपरिक सोच वाले परिवारों में कामकाजी स्त्री को दो पाटों के बीच पिसना पड़ रहा है। असल में तो उस पर बोझ पहले से ज़्यादा आ गया है। पहले उसकी ज़िम्मेदारी घर परिवार तक सीमित थी, अब कामकाज़ी दुनिया में आने से उस पर यह नया बोझ आ गया है, लेकिन उसकी पारंपरिक गृहिणी वाली भूमिका में उसे कोई रियायत नहीं मिली है।

यह जो बदलाव हमारे यहां आ रहा है इसकी एक बड़ी परिणति आर्थिक असमानता की वृद्धि के रूप में भी दिखाई दे रही है। पहले जहां समाज के अलग-अलग वर्गों के आर्थिक स्तर में बहुत अधिक भेद नहीं था, और अगर था तो भी वह लगभग अदृश्य था, अब यह खाई बहुत चौड़ी और दृश्यमान हो गई है। नव अर्जित वैभव वाले अपने वैभव प्रदर्शन का कोई मौका नहीं छोड़ना चाहते हैं, और उनमें से ज़्यादातर दूसरों को उनकी छोटी हैसियत का दंश देने में भी कोई संकोच नहीं करते हैं। घर-परिवार, समाज और देश में सर्वत्र परंपरा और आधुनिकता के बीच द्वंद्व बढ़ता जा रहा है। इस द्वंद्व के चलते वैज्ञानिक सोच आहत हो रहा है। बहुत बार तो लगता है कि अब यह इबारत केवल संविधान में बची रह गई है। हमारा जीवन तो घोर रूढ़िवाद और दकियानूसी सोच की गिरफ़्त में आ चुका है। पूरे दृश्य पर वर्चस्व उनका है जो हमें खींच कर पीछे ले जाना चाहते हैं, और हम उनके आगे बेबस हैं। यह देखना बहुत त्रासद है।

समाज कभी जड़ नहीं होता है। वह सतत गतिशील होता है। लेकिन देखने की बात यह है कि उसकी गति की दिशा कौन-सी है। अगर वह दिशा सही नहीं है तो हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि शिक्षा और जन-चेतना के प्रसार के माध्यम से उसमें समुचित बदलाव लाएं। हमारे अपने समाज की बहुत सारी चिंताजनक प्रवृत्तियों के मामले में ऐसा ही किए जाने की ज़रूरत है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

ग्राम पंचायत टोकसी को वजीरपुर पं. समिति में शामिल करने का विरोध

पांच ग्रामीण पानी की टंकी पर चढ़े, प्रशासन के आश्वासन पर उतरे

- **ग्रामीणों ने बताया कि टोकसी ग्राम पंचायत की गंगापुर सिटी से दूरी 5 किलोमीटर है एंव वजीरपुर की 20 किलोमीटर है एवं इसके साथ ही हमारा वर्षों से गंगापुर सिटी से जुड़ाव है**
- **ग्रामीणों ने मांग नहीं माने जाने पर सड़क जाम करने की चेतावनी दी**

गंगापुर सिटी, (निसं)। टोकसी ग्राम पंचायत को नई बनने वाली वजीरपुर पंचायत समिति में शामिल करने का विरोध तेज हो गया है। रविवार सुबह पांच ग्रामीण विरोध जताने के लिए पानी की टंकी पर चढ़ गए। टंकी पर चढ़े लोगों में पवन टोकसी, ऋषि मीणा, मंटू मीणा, वेदप्रकाश मीणा और आशीष मीणा शामिल थे। सुबह 7.30 बजे से शुरू हुआ यह विरोध प्रदर्शन करीब तीन घंटे तक चला। इस दौरान बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर जमा हो गए और प्रशासन व सरकार के विरोध में नारे लगाने लगे।

ग्रामीणों ने बताया कि टोकसी ग्राम पंचायत की गंगापुर सिटी से दूरी 5 किलोमीटर है एंव वजीरपुर की 20 किलोमीटर है एवं इसके साथ ही हमारा वर्षों से गंगापुर सिटी से जुड़ाव है। ग्रामीणों ने मांग नहीं माने जाने पर सड़क जाम करने की चेतावनी दी है। सूचना मिलते ही तहसीलदार बृजेश सिहरा और थानाधिकारी करणसिंह राठौड पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। प्रशासन ने प्रदर्शनकारियों से बातचीत की। लिखित आश्वासन मिलने के बाद पांचों ग्रामीण टंकी से नीचे उतर आए। वर्तमान में पंचायत राज अधिनियम के तहत ग्राम पंचायतों का पुनर्गठन और नए सीमांकन का काम चल रहा है। कलेक्टर के निर्देश पर गंगापुर सिटी में भी यह प्रक्रिया जारी है। टोकसी ग्राम पंचायत को नई बनने वाली वजीरपुर पंचायत समिति में शामिल करने का प्रस्ताव है। इससे पहले भी ग्रामीण मिनी सचिवालय में विरोध प्रदर्शन कर चुके हैं। उनकी मांग है कि टोकसी ग्राम पंचायत को गंगापुर सिटी पंचायत समिति में ही रखा जाए।

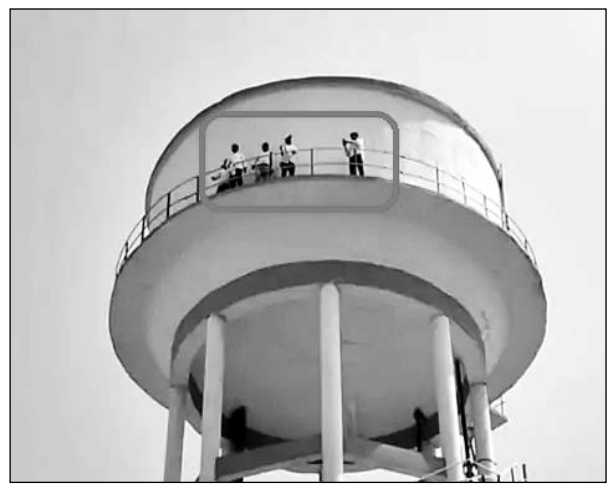

टोकसी पंचायत को वजीरपुर में शामिल करने के विरोध में पानी की टंकी पर पांच युवक चढ़ गये।

बीकानेर संभाग का सबसे बड़ा पीबीएम हॉस्पिटल सुरक्षा मानकों पर खरा नहीं उतर पा रहा

पीबीएम अस्पताल में मरीज सुरक्षित नहीं, बिल्डिंग की फायर और सेफ्टी ऑडिट कभी हुई

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर संभाग का सबसे बड़ा पीबीएम हॉस्पिटल सुरक्षा मानकों पर खरा नहीं उतर पा रहा है। फायर सेफ्टी ऑडिट के लिए डीपीआर अब तक नहीं बनी और बिल्डिंग की सेफ्टी ऑडिट कभी करवाई ही नहीं गई है। यही कारण है कि अचानक कोई घटना होने पर भगदड़ के हालात बन जाते हैं और मरीजों की जान पर बन आती है।

पीबीएम हॉस्पिटल के चर्म, रति एवं कुष्ठ रोग विभाग के प्रथम तल पर एचओडी कक्ष के एसी में हाल ही में आग लग गई थी। इससे पहले भी आग लगने की कई घटनाएं हो चुकी हैं। पीबीएम हॉस्पिटल की प्रमुख बिल्डिंग्स की सेफ्टी ऑडिट की तो काफी खामियां नजर आई। पीबीएम की मेन बिल्डिंग की छत कई जगह से पानी भरने के कारण डैमेज हो चुकी है। एक्स वार्ड और उसके सामने गैलरी में सुरक्षा की दृष्टि से लोहे के एंगल लगाए गए हैं। सी वार्ड के बाहर पट्टियां टूटी पड़ी हैं, जिन्हें एंगल से रोका हुआ है। इसी वार्ड के टॉयलेट की छत पिछले साल गिर पड़ी थी। उसे अब तक रिपेयर नहीं करवाया जा सका। इसके कारण एफ वार्ड का टॉयलेट भी बंद है। वार्डों के बाहर लगे अग्निशमन यंत्र अवधिपार हो चुके हैं। पिछले साल फरवरी में नए लगाए गए थे। सबसे अहम बात ये है कि मेन बिल्डिंग में मरीजों के लिए दो ही रैंप हैं। उनके फर्श भी उखड़े हुए हैं। ऑपरेशन के बाद शिफ्टिंग के दौरान या जांच के लिए जाते समय मरीज दर्द से कराह उठते हैं। मेन बिल्डिंग में लिफ्ट खराब पड़ी है। मरीजों को लाने ले जाने में काफी परेशानी उठानी पड़ती है। स्ट्रेचर खींचने के लिए अटेंडेंट की कोई व्यवस्था नहीं है।

पीबीएम प्रशासन ने बिजली का खर्च बचाने के लिए छतों पर सोलर प्लेटें लगवा कर काम तो अच्छा किया, लेकिन प्लेटों की हाइट फर्श से मात्र डेढ़-दो फीट ही रखी, जिससे कचरा और बारिश का पानी छत पर जमा होने लगा है। सफाई कभी होती नहीं। इससे छत के क्षतिग्रस्त होने की संभावना बढ़ गई है। पुरानी बिल्डिंग में पट्टियां क्रेक होना आम बात है। ग्राउंड फ्लोर पर उखड़ी हुई छतों को फॉल्स सीलिंग से ढक दिया गया है, जबकि जरूरत ही नहीं थी। हादसे सरकारी बिल्डिंग्स में ही ज्यादा होते हैं और उन्हीं की सेफ्टी ऑडिट के लिए कोई नियम ही नहीं है।

- **यही कारण है कि अचानक कोई घटना होने पर भगदड़ के हालात बन जाते हैं और मरीजों की जान पर बन आती है**

पीडब्ल्यूडी के रिटायर्ड एसई मुकेश गुप्ता बताते हैं कि सरकार ने सरकारी स्कूलों के लिए सेफ्टी ऑडिट के नियम बना रखे हैं, लेकिन सरकारी अस्पतालों के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है। अस्पताल प्रशासन के मांग करने पर संबंधित बिल्डिंग या स्थान की ऑडिट कराई जा सकती है।

आजकल निर्माण एजेंसियों भी काफी हो गई हैं। पीडब्ल्यूडी के अलावा यूआईटी, एनएचएम, आरएसआरडीसी भी सरकारी अस्पतालों में निर्माण कार्य करवाती है। पीबीएम हॉस्पिटल का निर्माण रियासतकाल में हुआ था। बिल्डिंग को डिजायन ही ऐसा है, जिससे वेंटिलेशन की कोई समस्या नहीं है। अब नई बिल्डिंग्स आर्किटेक्चर से डिजायन कराई जाती हैं। हालांकि सभी तरह के सुरक्षा मानकों का ध्यान रखा जाता है। नई बिल्डिंग्स में फायर सिस्टम अनिवार्य कर दिया गया है। यह सिस्टम पुरानी बिल्डिंग में भी होना चाहिए। मेन बिल्डिंग सौ साल पुरानी है, जहां फायर सिस्टम तक नहीं है। सुरक्षा मानकों का ध्यान नहीं रखा गया है।

बिजली के तार और पैनल खुले पड़े हैं। बच्चा अस्पताल के पीछे हॉस्टल जर्जर हालत में है। पूरा परिसर किसी भूल-भुलैया से कम नहीं है। कहीं पर भी पीबीएम का नक्शा नहीं है, जिससे यह पता नहीं चलता कि किस विभाग की बिल्डिंग कहां पर है। वार्ड और लैब की जानकारी के लिए मरीजों को भटकना पड़ता है। बाहर से आने वाले मरीजों को काफी परेशानी उठानी पड़ती है। सभी वार्डों में टीवी स्क्रीन तो लगा दी, लेकिन उसमें भी विभागों का नक्शा फीड नहीं किया गया। लिफ्ट खराब होने पर मरीज को ले जाने के लिए रैंप तक का पता पूछना पड़ता है। हल्दीराम मूलचंद हार्ट हॉस्पिटल में आपातकालीन प्रवेश द्वार अलग होना चाहिए। ढोला मारू के सामने प्रस्तावित था, लेकिन नहीं बना। ऊपर वार्ड के टॉयलेट के पास ही एक स्पेस है, जो कैथ लैब में खुलता है। पिछले साल एक मरीज की नीचे गिरने से मौत हो चुकी है।

डॉ. गौरीशंकर जोशी, उप अधीक्षक एवं नोडल अधिकारी आपदा प्रबंध बीकानेर का कहना है कि यह सही है कि पीबीएम हॉस्पिटल की फायर और सेफ्टी ऑडिट नहीं हुई है। इसके लिए पीडब्ल्यूडी को लिखा जा चुका है। पुरानी बिल्डिंग में फायर सिस्टम इंस्टालेशन करना आसान नहीं है। इसके लिए डीपीआर बननी है, जो बिना ब्ल्यू प्रिंट के संभव नहीं है। किसी आर्किटेक्चर से इसका ब्ल्यू प्रिंट तैयार करवाया जाएगा।

भरतपुर के सरकारी जनाना अस्पताल में सुविधाओं का अभाव, मरीज परेशान

- **अस्पताल में आने वाले मरीज गर्मी से बेहाल, लोग बाहर से पानी खरीदकर पीने को मजबूर**
- **खाली वार्ड में कूलर लगे हुए हैं, जहां मरीजों के लिए कूलर लगना चाहिए, वहां कूलर नहीं लगा रखा है**

भरतपुर, (निसं)। राज्य सरकार का लोगों को सरकारी अस्पतालों में बेहतर सुविधा प्रदान करने का दावा भरतपुर में खोखला नजर आ रहा है, लेकिन जिले के सरकारी जनाना अस्पताल में गर्मी के मौसम में पंखे तो हैं लेकिन चल नहीं रहे, जिस कारण ओपीडी पर्ची लेने के लिए लाइन में लगे मरीजों के पसीने छूट रहे हैं। यहां तक कि पीने के पानी की व्यवस्था भी अस्पताल में नहीं है। लोग बाहर से पानी खरीदकर पी रहे हैं।

अस्पताल के वार्डों में भर्ती मरीजों के लिए कूलर नहीं है जबकि खाली वार्ड में कूलर लगे हुए हैं। जनाना अस्पताल संभाग का बड़ा अस्पताल है। यहां प्रतिदिन हजारों की संख्या में मरीज पहुंचते है। लेकिन यहां पहुंचने वाले मरीजों को अस्पताल में सुविधाओं का अभाव है। यहां पहुंचने वाले मरीज गर्मी से परेशान है। ओपीडी पर्ची लेने के लिए लाइन में लगे मरीजों के ऊपर पंखा तो है लेकिन चल नहीं रहा, जिससे लोग गर्मी से परेशान है। ओपीडी पर्ची काउंटर के पास दो वॉटर कूलर हैं, लेकिन उनमें पानी नहीं होने से मरीज पैसे से पानी खरीदने को मजबूर है। लोग कई किलोमीटर का सफर तय कर अपस्ताल पहुंचते हैं, उन्हें उम्मीद होती है कि अस्पताल में पानी मिलेगा, लेकिन जब वहां पीने का पानी नहीं होने से मरीजों को काफी परेशानी हो रही है। जनाना अस्पताल के वार्डों में हालत यह है कि कूलर तो लेकिन वह कूलर मरीजों के काम नहीं आ रहे हैं। खाली वार्ड में कूलर लगे हुए हैं, जहां मरीजों के लिए कूलर लगना चाहिए वहां कूलर नहीं लगा रखा है। जिससे मरीज भीषण गर्मी में पंखे से काम चला रहे हैं। जब इस मामले को लेकर पीएमओ डॉ नगेंद्र भदौरिया से बात की तो उन्होंने कहा कि मामले की जांच की जाएगी।

जनाना अस्पताल की हालत से जिला कलेक्टर डॉ अमित यादव भी बाख़िब है। यही वजह है कि शनिवार को जनाना अस्पताल का निरीक्षण करने पहुंचे। जहां अस्पताल प्रशासन को कमियों को लेकर फटकार लगाई।

'नंदीशाला जन सहभागिता योजना अन्तर्गत नंदीशाला की स्थापना की जाएगी'

- **रोहट, बाली, सुमेरपुर, देसूरी, रानी, मारवाड़ जंक्शन, जैतारण में नंदीशाला की स्थापना की जाएगी**

पाली, (नि.सं.)। जिले में सड़कों पर विचरण करने वाले निराश्रित, बेसहारा नर गौवंशों के संरक्षण के लिए नंदीशाला जन सहभागिता योजना अन्तर्गत पंचायत समिति रोहट, बाली, सुमेरपुर, देसूरी, रानी, मारवाड़ जंक्शन, जैतारण में एक नंदीशाला की स्थापना की जाएगी।

सदस्य सचिव जिला स्तरीय गौपालन समिति एवं पशुपालन विभाग संयुक्त निदेशक डॉ. ओमप्रकाश बुनकर ने बताया कि नंदीशाला जन सहभागिता योजना के तहत इसके लिए पंचायत समिति स्तरीय नंदीशाला खोलने की पात्रता में स्थानीय निकाय/पंचायतीराज संस्थाओं के अतिरिक्त रजि. संस्था/गैर सरकारी संस्था/ पंजीकृत ट्रस्ट/पंजीकृत सहकारी संस्थाओं का नंदीशाला संचालन एवं निर्माण के लिए पात्र है। 250 नर गौवंश हेतु 10 बीघा भूमि, गौवंश वृद्धि अनुसार उसके अनुपात में अधिक भूमि की आवश्यकता, संस्था के पास स्वयं के स्वामित्व की 10 बीघा भूमि हो, 250 नर गौवंश को 20 वर्ष तक देखभाल करना आवश्यक हो, नन्दीशाला में संधारित गौवंशों को अनुदान 12 माह का देय होगा। नन्दीशाला का चयन जिला गौपालन समिति द्वारा आर्थिक, तकनीकी, भौतिक मापदण्डों के आधार पर किया जायेगा। तकनीकी मापदण्ड हेतु संस्था के पास निर्माण कार्यों हेतु तकनीकी विषय विशेषज्ञों की टीम होना आवश्यक हैं। 10 प्रतिशत अंशदान राशि का सी.ए. द्वारा जारी प्रमाण पत्र जमा कराना होगा। नन्दीशाला की स्थापना एवं निर्माण के लिए लागत 1.57 करोड़ का 90 प्रतिशत राज्यांश तथा 10 प्रतिशत संस्था का हिस्सा होगा। 10 प्रतिशत राशि का निर्माण कार्य संस्था द्वारा करवाया जायेगा।

डॉ. ओमप्रकाश बुनकर ने बताया कि नन्दीशाला संचालन समिति का चयन निविदा जारी कर किया जायेगा। निविदा जारी करने के उपरांत प्राप्त आवेदनों पर निर्णय जिला गोपालन समिति द्वारा किया जायेगा। नंदीशाला में करवाये जाने वाले नये निर्माण कार्यों का नंदीशाला संचालन समिति द्वारा एस्टीमेट जिला गोपालन समिति को उपलब्ध करवायेगा।

जिला स्तरीय गोपालन समिति द्वारा संस्था का चयन उपरान्त संयुक्त निदेशक द्वारा एवं सार्वजनिक निर्माण विभाग के सहयोग से जारी की जायेगी। सहायता राशि तीन किश्तों में उपलब्ध करवाई जायेगी।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 21 अप्रैल, 2025

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, अष्टमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2082, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र दिन 12:37 तक, साध्य योग रात्रि 11:00 तक, बालवकरण प्रातः 7:00 तक, चन्द्रमा आज मकर राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग दिन 12:37 से सूर्योदय तक है। आज शीतला बूढ़ा बास्योडा है। आज से राष्ट्रीय वैशाख मास आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:37 तक, शुभ 9:13 से 10:49 तक, चर 2:02 से 3:38 तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:01, सूर्यास्त 6:50

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कर्क
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा।

कन्या
व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
घर-परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अतिथियों के कारण दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

मकर
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। आज समय खराब होगा।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।